भगत कबीर – सबद १३

जोति की जाति जाति की जोती ॥

रागु गउड़ी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३२५

जोति की जाति जाति की जोती ॥
तितु लागे कंचूआ फल मोती ॥१॥
कवनु सु घरु जो निरभउ कहीऐ ॥
भउ भजि जाइ अभै होइ रहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥
तटि तीरथि नही मनु पतीआइ ॥
चार अचार रहे उरझाइ ॥२॥
पाप पुंन दुइ एक समान ॥
निज घरि पारसु तजहु गुन आन ॥३॥
कबीर निरगुण नाम न रोसु ॥
इसु परचाइ परचि रहु एसु ॥४॥९॥

सार: भय एक भ्रम है जो हमारे मन की उपज है। फिर भी यह हमारे जीवन को गहराई से प्रभावित करता है। इसका जन्म आत्म-जागरूकता की कमी और आस-पास की दुनिया से प्रेम के अभाव से होता है। जब हम स्वयं पर गहराई से विचार करने से बचते हैं तब हम उन सच्चाइयों को लेकर चिंतित हो जाते हैं जो हमें मिल सकती हैं और निर्णय करने लगते हैं। जब हम स्वयं और दूसरों के प्रति प्रेम नहीं रखते, तो अस्वीकृति, त्याग और असुरक्षा का भय पालते हैं। निडरता को वास्तव में अपनाने के लिए हमें अपने अहंकार की पकड़ से मुक्त होना होगा, अपने सत्य पर दृढ़ रहना होगा और जीवन के स्वाभाविक प्रवाह के प्रति समर्पण करना होगा। यह परिवर्तनकारी प्रक्रिया हमें स्वतंत्रता और प्रामाणिकता से भरे जीवन का अनुभव करने और अपनी पूरी क्षमता को उजागर करने में सक्षम बनाती है।

जोति की जाति जाति की जोती ॥

सार्वभौमिक जागरूकता की जाति क्या है और जाति में कौन सी चेतना है? यह अलंकारिक खोज का प्रश्न जातिगत भेदभाव की निरर्थकता और भ्रम को उजागर करता है।

तितु लागे कंचूआ फल मोती ॥१॥
जब चेतना का स्पर्श कांटेदार पौधे को छूता है तब वह मोती प्रदान करता है, यह दर्शाता है कि जिन्हें अयोग्य समझा जाता है वह भी ज्ञान को अपनाकर गुणों से परिपूर्ण हो सकते हैं। (१)

कवनु सु घरु जो निरभउ कहीऐ ॥
वह कौन सा घर है जिसे निडर कहा जा सकता है? यह उस मनस्थिति की ऐसी खोज है जो अज्ञात और परायेपन से मुक्त होकर निर्भयता में वास करती है।

भउ भजि जाइ अभै होइ रहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥
जहाँ भय का अस्तित्व नहीं है और व्यक्ति निर्भय होकर एक ऐसे क्षेत्र की खोज करता है जो अहंकार, संदेह और द्वैत से परे है जहाँ सद्भाव पलता है। (१)(विराम)

तटि तीरथि नही मनु पतीआइ ॥
पवित्र नदियों में स्नान करने और तीर्थों की यात्रा करने से मन को शांति नहीं मिलती। यह दर्शाता है कि धार्मिक कर्मकांड भले ही सच्चे मन से किए गए हों एक अशांत मन को शांत नहीं कर सकते।

चार अचार रहे उरझाइ ॥२॥
यह मन पवित्रता-अपवित्रता के विवाद में उलझा रहता है। यह ऐसी मानसिकता है जो सामाजिक और धार्मिक आचार-संहिताओं में फँसी रहती है। (२)

पाप पुंन दुइ एक समान ॥
पाप और पुण्य दोनों एक समान हैं। यह विचार पारंपरिक नैतिक और धार्मिक दृष्टिकोण को चुनौती देता है।

निज घरि पारसु तजहु गुन आन ॥३॥

सच्चे घर में ही कसौटी का पारस है। दूसरों के गुणों की नकल करना छोड़ दें। यह सुझाता है कि चेतना के भीतर आत्म-चिंतन का गुण निहित है, बिना सोचे-समझे अनुसरण न करें। (३)

कबीर निरगुण नाम न रोसु ॥

कबीर कहते हैं कि निर्गुण, निराकार सर्वव्यापी जागरूकता का चिंतन करते हुए कोई अप्रसन्नता नहीं होनी चाहिए।

इसु परचाइ परचि रहु एसु ॥४॥९॥

इस सार को पहचानें, संतोष को अपनाएँ और उसमें स्थिर रहें। यह आमंत्रण है निराकार सर्वव्यापी चेतना के प्रति जागरूकता के साथ जीने का। (४)(९)

तत्त्व: भगत कबीर जाति-आधारित भेदभाव की निरर्थकता और भ्रम को उजागर करने वाला एक चिंतनशील और अलंकारिक प्रश्न उठाते हैं। वह कहते हैं कि यदि सार्वभौमिक ऊर्जा सभी प्राणियों में विद्यमान है तब वह जातिविहीन हैं। यदि सभी जातियों में यह ऊर्जा समान है तो कोई भी स्वयं को श्रेष्ठ और दूसरों को हीन कैसे ठहरा सकता है? वह हमें न केवल धार्मिक कर्मकांडों और सामाजिक भूमिकाओं से परे जाने के लिए आमंत्रित करते हैं बल्कि नैतिकता, पहचान और द्वैत के सूक्ष्मतम जालों से भी परे जाकर एक आमूल-चूल स्पष्टता का अनुभव करने का भी आह्वान करते हैं। हमारा निर्भय निवास हमारी चेतना है जो आध्यात्मिक ज्ञान के मोती प्रकट करती है जब हम बाहरी मान्यता की तलाश छोड़कर अपने भीतर के सार को पहचानते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com